L.N. MITHILA UNIVERSITY
Darbhanga (BIHAR)
B.A. Part III
PAPER - III (H)
psychology (Honours)

Dr. Pramod Kumar Sahu.
Assit- professor.
Guest- Teacher.
V.S.J. college, Rajnagar,
Madhubani (BIHAR)
pramodkumardbg2018@gmail.com

Topic: The major determinants of personality.

व्यक्तित्व का विकास उन प्रक्रियाओं से संबंधित है। जिनके द्वारा व्यक्ति-व्यक्ति अपने बाह्य व्यवहार के प्रारूप सीखते है। आधुनिक विकासात्मक मनोविज्ञान यह स्वीकार करता है कि मानव व्यक्तित्व के विकास में पैतृकता, वातावरण, परिपक्वता तथा सीखना सभी का योगदान होता है। व्यक्तित्व विकास के संबंध में दो दृष्टिकोण रहे हैं।

(क) प्रथम दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व विकास की कुछ विशिष्ट शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक अवस्थाएँ है। जिनके माध्यम से विकास संभव होता है। यह सैद्धान्तिक दृष्टिकोण है। दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार

(ख) व्यक्तित्व विकास के कुछ प्रमुख निर्धारक तत्वों को निश्चित किया जा सकता है। जो घटक व्यक्तित्व निर्माण में योगदान देते हैं, यह शोध आधारित दृष्टिकोण है।

(Major Determinants of personality)

मानव व्यवहार को समझने के लिए व्यक्तित्व को समझना आवश्यक है। व्यक्तित्व के निर्माण में अनेक घटकों का योगदान होता है। शारीरिक घटक, संज्ञान एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के अतिरिक्त अनेक घटक व्यक्तित्व के निर्माण में योगदान देते है। व्यक्तित्व के प्रमुख निर्धारक घटक निम्नलिखित है।

(1) वंश परम्परा (Heredity) मनोवैज्ञानिकों का मत है कि कुछ सीमा तक वंशानुगत लक्षण भी व्यक्तित्व को निर्धारित करते है। रटहि का मत है। कि व्यक्ति को अपने वंशानुक्रम से ही जीवित रहने और विकास करने हेतु अपेक्षित आधारभूत संरचना की प्राप्ति होती है। जे० कैगन के अनुसार, वास्तव में व्यक्तित्व के प्रारम्भिक कार्य को वंशानुगत जीन्स स्थानान्तरित करते है। जीन्स हारमोन संतुलन को निर्धारित करते है तथा शारीरिक संरचना व्यक्तित्व को आकार प्रदान करती है।

संगठनात्मक व्यवहार के क्षेत्र में हुई खोजों से पता चलता है कि नेतृत्व परम्परावाद तथा सत्ता की आभाकारिता जैसे - गुण वंशानुगत रूप से विकसित होते हैं।

(2) शारीरिक संरचना - शरीर की संरचना के अनेक घटक जैसे - शरीर का आकार, स्नायुविक प्रणाली, प्रति प्रणाली, रक्तचाप, एवं दिमागी प्रणाली आदि भी व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित करते हैं। शारीरिक सक्रियताओं के सही संचालन में बुद्धि मानसिक योग्यता आदि का विकास होता है। दूषित शरीर संरचना से व्यक्तित्व के विकास में बाधा पड़ती है।

(3) वातावरणीय प्रभाव :- व्यक्तित्व विकास वातावरणीय घटकों से बहुत अधिक प्रभावित होता है। मनुष्य की सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण घर परिवार, संस्कृति, समुदाय, सामाजिक, मूल्य, साहित्य धर्म शिक्षा, मनोविनोद के साधन आदि मनुष्य के व्यक्तित्व को ढालते हैं। समस्त परिवेश की व्यक्तित्व के विकास में विशेष भूमिका रहती है।

(4) बाल्यकाल के अनुभव -
बाल्यावस्था के अच्छे-बुरे अनुभव भी आजीवन काल के लिए मानव के व्यक्तित्व की हिस्सा बन जाते हैं। माता-पिता तथा घर के अन्य सदस्यों का व्यवहार भी बच्चों के मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है।
(Fred Luthans) के अनुसार व्यक्तित्व के प्रमुख निर्धारक घटक निम्नलिखित हैं।

(1) जैविक - व्यक्तित्व विकास में जैविक घटकों की विशेष भूमिका होती है जीव विज्ञान संबंधी तीन तत्व निम्न प्रकार हैं।

(i) वंशानुगतता की भूमिका :- यह प्रभाव बहुत व्यापक होता है। मातृवंशीय प्रतिबिंबों विकास रक्त से जुड़ा है।

(ii) मस्तिष्क की योग्यता एवं बुद्धि वैभव

(iii) प्रबन्धकीय विवेक।

(iv) मस्तिष्क की विद्युतीय उत्तेजन

(v) मस्तिष्क विच्छेद मनोविज्ञान

(vi) नैतिक प्रतिपुष्टि

(vii) शारीरिक विशेषताएँ एवं परिपक्वता की दर

(2) सांस्कृतिक योगदान :- नैतिक घटकों की तुलना में व्यक्तित्व के निर्धारण में सांस्कृतिक घटक अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव डालते हैं। व्यक्तित्व विकास में सीखने की प्रक्रिया समाज में प्रचलित मूल्य, परम्पराएं, आक्रामकता, प्रतिस्पर्धा सहयोग की भावना स्वतंत्रता आदि घटकों का विशेष प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, समाज में प्रचलित धार्मिक एवं नैतिक मान्यताएं, इसकी संस्कृति के प्रति सहनशीलता की प्रवृत्ति सांस्कृतिक स्थानान्तरण, शिक्षा एवं सुरक्षा प्रणाली आदि घटक भी मनुष्यों के व्यक्तित्व को दिशा देने में सहायक होते हैं।

(3) परिवार का योगदान - व्यक्तित्व निर्माण में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान अपने परिवार और उसके महत्त्वपूर्ण योगदान अपने परिवार और उसके सदस्यों का होता है। माता-पिता की भूमिका बच्चों के लिए पहचान प्रक्रिया बनाने में महत्त्वपूर्ण होती है। माता-पिता बच्चों के लिए भूमिका मॉडल बन कर उनके व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। पहचान प्रक्रिया से मॉडल बन कर उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। पहचान प्रक्रिया से बच्चों में माता-पिता के समान भावनाएं एवं प्रवृत्तियां जागती हैं। इसी प्रकार की इच्छाएँ एवं प्रेरक बनते हैं। व्यक्ति में पहचान प्रक्रिया को सामाजिक सम्बद्ध माने जाते बढ़ाया जाता है। एक अध्ययन कार्य से स्पष्ट है कि प्रजातांत्रिक परिवारों के बच्चे अधिक क्रियाशील कम विवादी, प्रशंसा के लिए के प्रति अधिक जागरूक, अधिक सामाजिक तथा तानाशाह परिवार की तुलना में अधिक विचारशील होते हैं। परिवार के अन्य घटकों जैसे- बच्चों पर कम या अधिक ध्यान देने की प्रवृत्ति, कुसमायोजन, पृथकता, माता-पिता से अलग हो जाने का सदमा, परिवार का लाड़-दुलार यहाँ तक कि जन्म क्रम का भी व्यक्तित्व

निर्माण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने पाया है कि परिवार में प्रथम पैदा हुए, एवं बाद में आने वाले बच्चों में मध्य बच्चों की तुलना में स्नेह, प्रेम व जुड़ाव की भावना अधिक प्रबल होती है। उनमें अधिक चेतना, नियमितता, उत्सुकता, चिन्ता की प्रवृत्ति भी अधिक होती है।

(4) समाजीकरण की प्रक्रिया – वर्तमान संगठनों में कर्मचारी जिस तरह का व्यवहार करते हैं। उसमें व्यक्तित्व झलकते हैं। उसका सर्वश्रेष्ठ व्यवस्थीकरण समाजीकरण की प्रक्रिया है। यह आवश्यक समझा है कि संगठन वातावरण में कार्य कर रहे व्यक्तियों पर प्रबन्धकीय ज्ञान एवं कौशल को संरक्षित किया जाना चाहिए। क्योंकि आज के संगठन सामाजिक प्रणालियाँ हैं जो अपने सदस्यों का समाजीकरण करती हैं। यदि ये संगठनात्मक समाजीकरण की व्यक्तियों की विश्लेषण एवं नियंत्रण नहीं करते हैं।

(5) परिस्थितिजन्य प्रभाव – व्यक्तित्व के निर्माण पर आकस्मिक एवं तुरन्त परिस्थितियों का भी प्रभाव पड़ता है सामान्य: यह माना जाता है कि व्यक्तित्व स्थिर है।

Dr. Pramod Kumar Sahu
Date – 09/07/2020
Sub – Psychology

Scanned with CamScanner